नित्याह्निकतिलकम्

A Critical Edition in Progress

Version of April 6, 2020

Csaba Kiss

Contents

स्तुतिः 4
आश्रमाः 5
स्नानम् 7
यज्ञोपवीतलक्षणम् 7

मुक्तकेन विरचितं

नित्याह्निकतिलकम्

[स्तुतिः]

ओं नमः परशम्भवे।
शशधरसदृशसरोजे अलके देवाक्षयानके चरणौ।
सितरजभास्वरविमलौ शम्भोर्नित्यं [ ] पान्तु जनान् ॥१।१॥
यस्य प्रसारमतुलमाब्रह्मस्तम्बभुवनपरान्तगम्।
स श्रीनाथकुलेशः श्रीकुब्जिकाधिदैवो जयति ॥१।२॥
कुकारः पार्थिवो बीजो अब्जिकोपरिसंस्थितः।
का काली शिवगा वक्रा सा श्रीकुब्जिका जयति ॥१।३॥
सृष्टा यया परा विच्च हंसवर्त्तिद्वीपकुजा।
सा जनेशी कलौ काली संस्थिता पश्चिमे गृहे ॥१।४॥
वेदात्तु परमं शैवं शैवाद्दक्षिणमुत्तमम्।
दक्षिणात्पश्चिमं श्रेष्ठमतः परतरं न हि ॥१।५॥
विज्ञाय श्रीकुब्जिकायाः श्रीकुजेश्वरसहितायाः।
नृणां स्वर्गाप्तिहेत्वर्थं नित्याह्निकमिहोच्यते ॥१।६॥
ज्ञानार्णवमगाधो ऽयं श्रीशम्भुशासनो महान्।
तत्र पारं परं गच्छन् वीची श्रीकण्ठसंज्ञकः ॥१।७॥
तच्चरणैर्यथा दृष्टं श्रीमत्पश्चिमशासने।
पारम्पर्यक्रमायातं सुगोप्यमनुलिख्यते ॥१।८॥
स्वगोत्राणां हितार्थाय श्रीमच्छ्रीकण्ठसूनुना।
मुक्तकेन कियद्गूढं सोपदेशं जयेन तु ॥१।९॥

Codices: A: NGMPP Access 1-1320, Reel: B 26/10 (its label also says: A 1306/34); B: NGMPP Access 3-384, Reel A 41/11; C: NGMPP Access 1-1361, Reel B 26/11; D: NGMPP Access 5-854, Reel A 1297/11; E: NGMPP Access 9-58, Reel C 4/24; F: NGMPP Access 5-4995, Reel A 162/7. **1.1** Āryā metre with one missing syllable? • ≈ Ugracaṇḍāpūjāpaddhati lines 428–29: शशधरशदृशं स लोके देवाक्षयानके चरणौ। शितरजम्भास्वरविमलौ सम्भो नित्यं पातु जनार्णि॥ **1.2** Āryā metre CHECK.

1.1a ◦सरोजे] ABCEF ; ◦सरोज्ञे D • अलके] BDEF ; अ⸢ल⸣के⸣ A, अ⸢ला⸣के C **1.1b** पान्तु जनान्] ABCEF^{pc} ; पान्तु जना× D, पात जनान् F^{ac} **1.2a** यस्य प्रसारमतुलमा◦] ABCEF ; ××××××××मा D • ◦स्तम्ब◦] F ; ◦स्तम्भ◦ ADE, ◦स्तम्भम् B, omitted in C **1.2d** ◦दैवो] ABCDF ; ◦देवो E **1.3ab** पार्थिवो बीजो अब्जिकोपरिसंस्थितः] ABCEF ; पा××××××××××××तः D **1.3c** शिवगा वक्रा] ABDEF ; शिवक्रा C **1.4b** हंस◦] ABDEF ; ⸢हस◦⸣ C • ◦वर्त्तिद्वीपकुजा] ABCEF ; ◦व××××× D **1.4c** सा जनेशी कलौ काली] ABCEF ; ×××××××ली D **1.5a** वेदात्तु परमं] F ; वेदात्परमं ABCD, वेदान्तं परमं E • शैवं] ABF ; omitted in C, शेवं D, ⸢शै⸣वं E **1.5b** शैवाद्द◦] ABCDE^{pc}F ; शैवा द◦ E **1.5cd** श्रेष्ठमतः परतरं न हि] ABCEF ; श्रेष्ठं ×××××××× D **1.6a** विज्ञाय श्रीकुब्जिकायाः] ABCEF ; ×××××⸢ब्जि⸣कायाः D **1.6b** ◦सहितायाः] ABCDF ; ◦सहिताः E **1.6c** स्वर्गा◦] em. ; वग्गा◦ ABCDEF • ◦अर्थं] ADEF ; ◦अर्थंन् B, ⋆⋆ C **1.6d** नित्याह्निकमिहो◦] ADEF ; नित्याह्निकमिवो◦ B, ⸢नित्याह्निक⸣⋆⋆⋆⋆ C **1.7a** ज्ञानार्णवमगाधो ऽयं] ABEF ; ⋆⋆⋆⋆⋆गाधो यं C, ×××××××× D **1.7b** श्रीशम्भुशासनो] ABCEF ; ××××शासनो D **1.7c** पारं परं गच्छन्] ABDEF ; ⸢पारपरग⸣⋆ C **1.7d** वीची श्रीकण्ठसंज्ञकः] ADF ; वीची ⋆⋆⸢ण्ठ⸣संज्ञकः B, ⋆⋆श्रीक⋆⋆⋆⋆ C, वीरी श्रीकण्ठसंज्ञकः E **1.8ab** तच्चरणैर्यथा दृष्टं श्रीमत्पश्चिमशासने] ABEF ; ⋆⋆⋆⋆⋆⋆⋆⋆⋆⋆⋆⋆⋆ ⸢शासने⸣ C, तच्चरणैर्यथा दृष्टं ×××××××× D **1.8c** पारम्पर्य◦] ABCEF ; ××पर्य◦ D **1.8d** अनु◦] ABCF ; अत्र DE (unmetr.) **1.9b** ◦सूनुना] ABCEF ; सू×× D **1.9cd** मुक्तकेन कियद्गूढं सो◦] A ; ⋆⸢क्त⸣केन कियद्गूढं सो◦ B, मुक्तकेन कियद्गुढं सो◦ C, ×××××यद्गूढं सो◦ D, मुक्तकेन हि यद्गूढ⸢म्स्य⸣ E, मुक्तकेन वियद्गूढं F • ◦देशं] ABCDE ; ◦दे⸢श⸣◦ F

आधारादिसुसूक्ष्मान्तं परान्तं परनिर्णयम्।
कथितं येन सुस्पष्टं तं श्रीकण्ठगुरुं नमे ॥१।१०॥

[आश्रमाः]

श्रीभैरव उवाच।
अथातः सम्प्रवक्ष्यामि आश्रमाणां स्थितिं प्रिये।
येनासौ वर्तितो योगी मेलकं त्रिविधं लभेत् ॥१।११॥
गृहस्थः सालयी चैव चारवी च वनाश्रयी।
नैष्ठिकश्चैव योगी च षट्प्रकाराश्रमस्थितिः ॥१।१२॥

[गृहस्थः]

साधिकारः सपत्नीकः शास्त्रज्ञस्तत्त्ववेदकः।
क्षमी च गुप्तलिङ्गी च गृहस्थः समयस्थितः ॥१।१३॥

[सालयी]

कृषिवाणिज्यकर्ता च सेवको ऽपतिरेव वा।
येन केनैव पुण्येन आचार्यस्तेन पूज्यते ॥१।१४॥
आचार्येण क्रिया कार्या सम्यक्सिद्धा कुलान्वये।
निरंशस्य महादेवि कुलद्रव्यैस्तु सम्मता ॥१।१५॥
आगतं न त्यजेद्यस्तु गत्वा नैव परिग्रहेत्।
न केवलं मनुष्याणां स गुरुर्देवदुर्लभः ॥१।१६॥
एकान्तस्थः सपत्नीकः सुगुप्तश्च प्रकाशनः।
संत्यक्तानुग्रहः शान्तः सालयी खेचरं व्रजेत् ॥१।१७॥

[चारवी]

निष्कलत्रः सदैकाकी निःसङ्गः समयस्थितः।
पीठादिग्रामपर्यन्तं पर्यटेच्चरुकाशया ॥१।१८॥
विप्रादिश्वपचान्तेषु सर्वभक्षः कृतान्तवत्।
चारव्यो व्यापका देव्यः सर्ववर्णेषु संस्थितः ॥१।१९॥

[वनचारी]

1.16 ≈ KMT 3.47: आगतं न त्यजेद्वस्तुं यो गत्वा न परिग्रहेत्। स गुरुर्न मनुष्यानां देवानामपि दुर्लभः॥ But see Sanderson 2002:12 **1.19d** = BraYā 71.97b

---

1.10a °सुसूक्ष्मान्तं] ACDEF ; °सुशू⟨म्ना⟩न्तं B **1.10b** परान्तं पर°] ABDF ; omitted in C , परात्परत° E **1.10c** कथितं] ABCEF ; कथितां D **1.10d** °कण्ठगुरुं नमे] ABF ; °कण्ठं गुरुं नमे C , श्री×××××× D , °कण्ठगुरोत्तमम् E **1.11** °भैरव उवाच] ACDEF , °⟨भैरवोवाच⟩ B **1.11b** स्थितिं] ACDEF ; स्थिति B **1.11c** वर्तितो] ACDEF ; वर्त्ति⟨ते⟩ B **1.11d** त्रिविधं लभेत्] ABCEF ; त्रि×××× D **1.12a** गृहस्थः] ABCEF ; ××× D **1.12b** च] ABCDF ; र E **1.12cd** च षट्प्रकारा°] ABDEF ; ××⟨प्रा⟩कारा° C **1.13a** साधिकारः सपत्नीकः] AB^{pc}CEF ; साधिकारः साधिकारः सपत्नीकः B^{ac} , साधि×××××× D **1.13b** शास्त्रज्ञस्तत्त्व°] ABEF ; शास्त्रज्ञ⟨स्त⟩×° C , ××××× D **1.13c** °लिङ्गी] ADEF ; °लि⟨ङ्गी⟩ BC **1.13d** °स्थितः] AB^{pc}CDEF ; °स्थितिः B^{ac} **1.14a** °वाणिज्य°] ACDEF ; °वानिज्य° B • °कर्ता च] ABCEF ; ××× D **1.14b** सेवको पतिरेव वा] ABCEF ; ×××××××× D **1.14c** येन केनैव] ABCEF ; ×× ⟨के⟩नैव D **1.15b** सम्यक् सि°] ACEF ; संम्यक् सि° B , सम्यत्सि° D **1.15ab** निरंशस्य महादेवि कुलद्रव्यैस्तु सम्मता] ABCEF ; निर×××××××××××××× D **1.16a** त्यजेद्यस्तु] ABCDF ; त्यजेद्वस्तु E **1.16c** केवलं] ABCEF ; केवल° D **1.17b** एकान्तस्थः सपत्नीकः सुगुप्तश्च प्रकाशनः] ABCF ; एकान्तस्थः सपत्नीकः सुगुप्तश्च प्रकाशतः E , ×××××××××××× श्च प्रकाशतः D **1.18a** सदैकाकी] ABDF ; सदेकाकी CE , ×××× **1.18b** निःसङ्गः समयस्थितः] ABEF ; निःसङ्गाः समयस्थितः C , ××××मयस्थितः D **1.18c** °न्तं] ABCF ; °न्त DE **1.18d** पर्यटेच्च°] ACDEF ; पर्यटोच्च° B **1.19a** °न्तेषु] ABCEF ; °तेषु D **1.19b** सर्व°] ABCDF ; सर्वः E • कृतान्तवत्] ABCEF ; कृता×× D **1.19c** चारव्यो व्यापका] ABCEF^{pc} ; चारव्यो व्याका F^{ac} , ××××पका D **1.19d** °स्थितः] ABCDF ; °स्थिताः E

लब्धदीक्षो ऽभिषिक्तश्च मन्त्रसिद्धिं समीहवान्।
गुरुवक्त्रव्रते निष्ठः संस्थितो गिरिगह्वरे ॥१।२०॥
क्षेत्राबद्धो जिताहारः कन्दमूलाशनस्थितः।
जितेन्द्रियः सदोत्साही वनचारी च साधकः ॥१।२१॥

[नैष्ठिकः]

समीहते न भुक्तिं यः सिद्धयो बहुधाश्च याः।
लोकातीतश्च संन्यासी मुक्तिमेवाभिवाञ्छति।
निःसङ्गो गुप्तलिङ्गी च परश्चाद्वैतनैष्ठिकः ॥१।२२॥

[योगी]

नानारूपधरो नित्यं जरत्कन्थावगुण्ठितः।
निर्द्वन्द्वो निर्भयः शान्तो निश्चर्यायोगतत्परः ॥१।२३॥
संध्यायां पर्यटेद्भैक्ष्यं सदैव चरुकाशया।
निर्जने परमानन्दसंस्थितो ऽहर्निशं दृढः।
सिद्धयोगान्वयी योगी योगसिद्धिं समीहवान् ॥१।२४॥

[पतिताः]

असिद्धे योगविज्ञाने क्रीडां कुर्वन्ति ये नराः।
पतिताः पशवस्ते ऽत्र कुलाचारविडम्बकाः ॥१।२५॥
आश्रमाणां बहिर्भूताश्चर्यां कुर्वन्ति लोलुपाः।
भक्ष्यन्ते कुलदेवीभिः पूतनाभिरुपद्रुताः ॥१।२६॥

[???]

दीक्षाभिषेकसम्पन्नः शम्भोश्चरणचन्द्रगः।
गुरुक्रमपरो भूत्वा नित्यं नैमित्तिकं भजेत् ॥१।२७॥
मन्त्रो विद्या परा मुद्रा योगिनी कुलदेवता।
एताः पञ्चविधाः शक्तिर्लिङ्गयोन्यां व्यवस्थिताः ॥१।२८॥
तस्मान्न दूषयेल्लिङ्गं रौप्यहेमादिबाणकम्।
षडश्रपीठिकायुक्तं पूज्यं सिद्धिफलप्रदम्।
अत्रोदरे जगत्सर्वं क्रमश्चापि महाक्रमः ॥१।२९॥

1.20c °षिक्त°] ABCDF ; °विक्त° E **1.20b** °सिद्धिं] ABCEF ; °सिद्धि D **1.20cd** गुरुवक्त्रव्रते निष्ठः संस्थितो गिरिगह्वरे] E ; गुरुवक्त्रव्रतनिष्ठः संस्थितो गिरिगह्वरे ABCF (unmetr.), ×××××××××××××××रे D **1.21a** क्षेत्रा°] ACDEF ; क्षेत्र° B **1.21b** °शन°] ABCDF ; °सने E **1.21c** °न्द्रियः] ACDEF ; °न्द्रिय B • सदो°] ABCDF ; सदौ° E **1.22a** यः] ABCEF ; × D **1.22b** सिद्धयो बहुधाश्च याः] ABCF ; ×××× ×××?याः? D, सिद्धं यो बहुधाश्च यः E **1.22d** परश्चा°] ACDEF ; प⋆⋆ B • नैष्ठिकः] ABCEF ; नैष्ठि× D **1.23a** नानारूपधरो नित्यं] ABCEF ; ×××××××× D **1.23b** जरत्कन्था°] CE ; जरत्कण्ठा° ABF, ××त्कन्था° D **1.23c** निर्द्वन्द्वो] ADF ; निर्द्वन्दो B, निद्वन्द्वो C, निर्द्वद्वो E **1.24a** पर्यटेद्भैक्ष्यं] ABDEF ; पयटेद्भैक्ष्य C, पर्यटे×× **1.24b** सदैव चरुकाशया] ABEF ; सदेव चरुकाशया C, ×××××××× D **1.24cd** निर्जने परमानन्दसं°] em. ; निर्जने परमानन्दः सं° ABCEF, ××××?र?मानन्दः सं° D **1.24a** °न्वयी] ACDE ; °न्वा?या? B, °न्वया F **1.24b** °सिद्धिं] ABCDE ; °सिद्ध F **1.25a** असिद्धे योगविज्ञाने] ABEF ; असिद्धे योगविज्ञान C, ×××××××× D **1.25b** क्रीडां कुर्वन्ति ये नराः] ABEF ; क्रीडा कुर्वन्ति ये नराः C, ×××××××× D **1.25c** °वस्ते त्र] ABCD ; °वस्तत्र EF **1.26ab** °भूताश्चर्यां] ADF ; °भूता चर्यां B, °भूताश्चर्या C, °भू?ष्टा?श्चर्यां E **1.26b** लोलुपाः] ABCF ; लोलुपा× D, लोलपाः E **1.26cd** भक्ष्यन्ते कुलदेवीभिः पूतनाभिरुपद्रुताः] ABCEF ; ×××××××××××भिरुपद्रुताः D **1.27a** °सम्प°] ACDEF ; °सप° B **1.27b** °गः] ABCDF ; °गाः E **1.27d** नित्यं नैमित्तिकं भजेत्] ABCE ; नि××××××× D, नित्यनैमित्तिकं भजेत् F **1.28a** मन्त्रो विद्या परा] ABCEF ; ×××द्याधरा D **1.28b** °देवता] ABCDE ; °देववा F **1.28c** °विधाः] ABCD ; °विधा E, °विधां F **1.28cd** शक्तिर्लि°] ABDEF ; शक्ति लि° C • °स्थिताः] ABCDF ; °स्थिता E **1.29a** तस्मान्न दूषयेल्लिङ्गं] ABCEF ; ×××××××× D **1.29b** रौप्य°] ABD ; ?रौ?प्य° C, रौप्यं E, लौप्य° F • °बाणकम्] ABCDE ; °वानकम् F **1.29c** षडश्र°] ACDEF ; षडसु° B • °पीठिका°] ABCDF ; °पिठिका° E **1.29f** °क्रमः] ABCEF ; क्र× D

[स्नानम्]

प्रातरुत्थाय। 1

ऊकारं वायुबीजं तदुपरि वरुणं वज्रपाणिं तदूर्ध्वे
कालं वर्णान्तयुक्तं तदुपरि परमं वह्निबीजं सहंसम् ।
इन्दुबिन्दुलयान्तं सितकमलपरं क्षीरधारा स्रवन्तं
दृष्ट्वा कूटं तु नित्यं दहति कुलमलं मेरुतुल्यं हि पापम् ॥१।३०॥

इति कूटं स्वान्ते ऽर्कराशिसदृशं पापनाशाय ध्यायेत्। 2

जलस्नानं प्रकुर्वीत पञ्चाङ्गमथवा पुनः।
जलस्नानमाप्लवनमामूर्ध्निपर्यन्तं भजेत् ॥१।३१॥

क्षोणीजलतेजवाय्वीश पराबीजानि बिन्दुयुक्तानि। जले सप्तधा विन्यस्य शम्भुमन्त्रमुच्चरन् 3
त्रिधा स्नायात्॥ अथवा पञ्चाङ्गं पादौ हस्तौ मुखं प्रक्षाल्य। अस्त्ररहितमन्त्रसंहितया 4
सितरजःकुम्भमुद्रादियोगेन वौषडन्तेन मन्त्रस्नानम्॥ जलाशयादुत्थाय। आसनाणुना 5
कटिसूत्रम्।मायाबीजेन कौपीनम्। नवात्मना यज्ञोपवीतम्। रदनाक्षरया मुद्रिकाम्। 6
मदनेन योगपट्टम्। आकाशेनोत्तरीयम्। वायुबीजेन प्रावरणम्। गृहस्थस्य शुक्लपटम्। 7
आसनेनासनम्। यतिगृहस्थयोर्मृगव्याघ्राजिनम्। नवात्मना वेणुदण्डमिति॥ 8

[यज्ञोपवीतलक्षणम्]

यज्ञोपवीतलक्षणं वक्ष्ये। 9

स्थूलं च वातिसूक्ष्मं च त्यक्त्वा सूत्रमनुत्तमम्।
कर्तितं कुलजाभिश्च त्रिगुणं त्रिगुणीकृतं ॥१।३२॥
वर्तयित्वा प्रयत्नेन कारयेत्तिसरं पुनः।
एष स्थानद्वयं कृत्वा सावित्र्या ग्रन्थयेत्ततः ॥१।३३॥
धौतशुक्लं शुभं सूत्रं अलक्ष्या? मलनाशनं।
यस्य विधृतमात्रेण पुमान् ब्रह्मसमो भवेत् ॥१।३४॥
त्रिगुणं त्रिगुणीकृत्य वेणीकृत्वा प्रयत्नतः।
तेनैव च शताद्धाभिरुत्तरीयाच्च शङ्कया ?? ।

इति सोत्तरीययज्ञोपवीतलक्षणं॥ 10

---

l1 प्रातरुत्थाय] ABCEF ; ××××य D **l2** इति कूटं] ACEF ; इति कूटा⋆ B, ×××× D **l2** स्वान्ते] ABEF ; स्वाम्त C, ×× D **l2** ऽर्कराशि°] ABCE ; ××× D **l3** क्षोणीजलतेजवाय्वीश पराबीजानि] ABD ; जलपवनतेजःक्षोणीश बीजानि CE, जलपवनतेजःक्षोणीजलतेजवाय्वीश पराबीजानि F **l4** मन्त्रमुच्चरन् त्रिधा स्नायात्] ABCEF ; मन्त्रमु×××××× D **l4** अथवा पञ्चाङ्गं पादौ हस्तौ] ABC ; ×××××××दौ हस्तौ D, अथवा पञ्चाङ्गेन हस्तौ पादौ E, अथवा पञ्चागं हस्तौ पादौ F **l5** वौषडन्तेन] ABCEF ; वौ×××× D **l5** मन्त्रस्नानम्] ABCEF ; ×××× D **l5** जलाशयादुत्थायँळैंज ABCF ; ×××दुत्थाय D, जलाशयादुथाय E **l6** °सूत्रम्] AE ; °सूत्र C, °सूत्रं ह्स्रौं D **l6** कौपीनम्] ABCF ; कोपीनम् DE **l6** यज्ञोपवीतम्] ABCEF ; यज्ञो××× D **l6** रदनाक्षरया मुद्रिकाम्] ABCEF ; ×××××××द्रिकां D **l7** मदनेन] ABCE^{pc}F ; मदनेन ऐं D, मदने E^{ac} **l7** आकाशेनोत्तरीयम्] ABCF ; आकाशे ह्यं नोत्तरीयं D, आकाशिनोत्तरीयं E **l7** प्रावरणम्] ABEF ; प्रावरण C, प्रा यं वरणं D **l7** गृहस्थस्य शुक्लपटम्] ABCEF ; ×××××××× D **l8** आसनेनासनम्] ABCEF ; ××नेनासनं D **l8** °जिनम्] ACEF ; °जिन B, °जित D **l9** यज्ञोपवीत°] ABCE ; यज्ञोपवाति° D

1.30a °बीजं] ABCEF ; °बीयं D सहंसम्] ABCEF ; ××× D **1.30c** इन्दुबिन्दुलयान्तं] ABF (unmetr.) ; इन्दुम्बिन्दुलयान्तं C (unmetr.), ××××××× D, इन्दुबिन्दुलायान्तं E (unmetr.) **1.30d** कूटं] CDEF ; कूतान् AB • पापं] ABCEF ; ×× D **1.31cd** जलस्नानमाप्लवनमामूर्ध्निपर्यन्तं भजेत्] ABCE ; जल××× ××××××××××× D, जलस्नानमाप्लवनमामूर्ध्वपर्यन्तं भजेत् F